



ଓଡ଼ିଶାର ସମସ୍ତ ପୂର୍ବ ବର୍ଷର ପ୍ରଶ୍ନ ଉତ୍ତର ପାଇଁ
Download “**Tech Of World**” App



Call/WhatsApp-
8596976190

High School Teacher TGT Hindi Previous Year Question

FREE DEMO

10 Toughest Hindi Literature & Grammar Questions (2021 – 2023)
with Full Solutions



HINDI – 10 TOUGHEST PYQ

Hand-picked from 3 TGT Hindi papers (DSE Odisha TGT Hindi 2021 & 2022 and OSSC RHT Hindi Main 2023) – with the same detailed solutions you get in the full pack.

Q-1 भगवती चरण वर्मा द्वारा रचित उपन्यास 'चित्रलेखा' के संबंध में निम्नलिखित कौन-सा कथन सही नहीं है?

[DSE Odisha TGT HINDI 2021]

- (A) महाप्रभु रत्नाम्बर अपने दोनों शिष्यों को योगी कुमारगिरी और भोगी बीजगुप्त के पास भेजते हैं।
(B) इसका कथानक मौर्यकालीन सम्राट चंद्रगुप्त के शासन काल का है।
(C) यह एक समस्या प्रधान उपन्यास है, जो पाप-पुण्य के प्रश्न पर आधारित है।
(D) चित्रलेखा पाटलिपुत्र की राजनर्तकी तथा महाप्रभु रत्नाम्बर की प्रेमिका है।

ANS- (D) चित्रलेखा पाटलिपुत्र की राजनर्तकी तथा महाप्रभु रत्नाम्बर की प्रेमिका है।

व्याख्या: 'चित्रलेखा' भगवतीचरण वर्मा का प्रसिद्ध उपन्यास है। इसमें **चित्रलेखा** पाटलिपुत्र की नर्तकी और सामंत **बीजगुप्त** की प्रेमिका है, रत्नाम्बर की नहीं। रत्नाम्बर एक महात्मा हैं, जो अपने शिष्यों को पाप-पुण्य की परीक्षा के लिए भेजते हैं। इसलिए (D) कथन ठीक नहीं है।

मुख्य बिंदु:

- ♦ **निष्कर्ष:** अंत में रत्नाम्बर कहते हैं कि संसार में पाप कुछ नहीं, वह मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है।
- ♦ **शिष्य:** रत्नाम्बर श्वेतांक को बीजगुप्त के पास और विशालदेव को कुमारगिरि के पास भेजते हैं।
- ♦ **प्रकाशन:** यह उपन्यास 1934 में प्रकाशित हुआ।

अन्य विकल्प:

- (A) महाप्रभु रत्नाम्बर अपने दोनों शिष्यों को योगी कुमारगिरी और भोगी बीजगुप्त के पास भेजते हैं। — ✓ उपन्यास की कथा-भूमिका यही है।
(B) इसका कथानक मौर्यकालीन सम्राट चंद्रगुप्त के शासन काल का है। — ✓ कथा मौर्य काल की है।
(C) यह एक समस्या प्रधान उपन्यास है, जो पाप-पुण्य के प्रश्न पर आधारित है। — ✓ इसका केंद्र पाप-पुण्य की समस्या है।

Q-2 'मूर्तिव किं राजर ह्येव न केहि ने। सप्तपात्र सप्तधातु करिचारिले नहि।' इस वाक्य का हिंदी में सही अनुवाद होगा -

[DSE Odisha TGT HINDI 2021]

- (A) मालिक या चाकर कोई भी मेरी समस्या का समाधान नहीं किया।
(B) मालिक या नौकर कोई भी मेरी समस्या का समाधान किया।
(C) स्वामी या नौकर कोई मेरी समस्या का समाधान करना नहीं चाहा।
(D) मालिक या नौकर कोई भी मेरी समस्या का समाधान न कर सका।

ANS- (D) मालिक या नौकर कोई भी मेरी समस्या का समाधान न कर सका।



व्याख्या: ओडिया वाक्य का अर्थ है — 'मालिक हो या नौकर, कोई भी मेरी समस्या का समाधान नहीं कर सका।' विकल्प (D) में अर्थ पूरा है और वाक्य व्याकरण से शुद्ध है। इसमें **न कर सका** क्रिया-रूप ठीक लगा है।

नियम: 'सकना' सहायक क्रिया के साथ कर्ता पर 'ने' नहीं लगता — 'कोई न कर सका'; पर 'किया', 'चाहा' जैसी सकर्मक भूतकालिक क्रियाओं के साथ 'किसी ने' चाहिए।

अन्य विकल्प:

(A) **मालिक या चाकर कोई भी मेरी समस्या का समाधान नहीं किया।** 'किया' के साथ 'किसी ने' चाहिए; और 'न कर सका' वाला असमर्थता का भाव भी छुट गया है।

(B) **मालिक या नौकर कोई भी मेरी समस्या का समाधान किया।** इसमें 'नहीं' का भाव छुट गया है, इसलिए अर्थ उलट जाता है।

(C) **स्वामी या नौकर कोई मेरी समस्या का समाधान करना नहीं चाहा।** इसमें 'चाहा' से इच्छा का भाव आता है, असमर्थता का नहीं; 'चाहा' के साथ 'किसी ने' भी चाहिए।

Q-3 सूची - I में दिए गए मुहावरों को सूची - II के उनके अर्थों के साथ सुमेलित करें तथा नीचे दिए गए कूटों को चुनकर सही उत्तर दें।

[DSE Odisha TGT HINDI 2021]

सूची I	सूची II
(क) आपे से बाहर होना	(i) सिद्धांतहीन व्यक्ति
(ख) थाली का बैंगन	(ii) ईर्ष्या से जलना
(ग) पाँचों उँगली घी में होना	(iii) क्रोध में मर्यादा लाँघ जाना
	(iv) लाभ ही लाभ होना

(A) (क)-(i), (ख)-(iv), (ग)-(ii)

(B) (क)-(ii), (ख)-(i), (ग)-(iii)

(C) (क)-(iii), (ख)-(i), (ग)-(iv)

(D) (क)-(ii), (ख)-(i), (ग)-(iv)

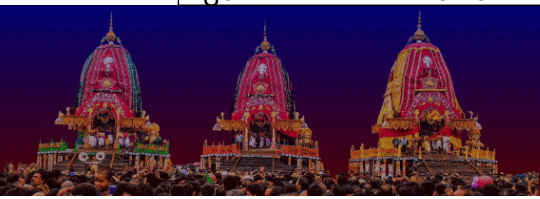
ANS- (C) (क)-(iii), (ख)-(i), (ग)-(iv)

व्याख्या: 'आपे से बाहर होना' का अर्थ क्रोध में मर्यादा लाँघ जाना (3) है। 'थाली का बैंगन' सिद्धांतहीन व्यक्ति (1) के लिए आता है। 'पाँचों उँगली घी में होना' लाभ ही लाभ होना (4) है। इसलिए सही मेल (क)-(3), (ख)-(1), (ग)-(4) है।

नियम: मुहावरा अपने सीधे अर्थ से हटकर विशेष अर्थ देता है — थाली का बैंगन = सिद्धांतहीन।

अन्य विकल्प:

(A) **(क)-(1), (ख)-(4), (ग)-(2):** तीनों जोड़े मेल नहीं खाते; 'ईर्ष्या से जलना' (2) किसी मुहावरे का अर्थ नहीं है।



- (B) (क)-(2), (ख)-(1), (ग)-(3): (ख)-(1) ठीक है, पर (क) का अर्थ (3) और (ग) का अर्थ (4) है।
(D) (क)-(2), (ख)-(1), (ग)-(4): (ख) और (ग) ठीक हैं, पर (क) का अर्थ (3) है।

Q-4 'कनक-कनक ते, सौगुनी मादकता अधिकाय।' बिहारी के इस दोहे के पहले चरण में आए शब्द 'कनक-कनक' के क्या अर्थ हैं?

[DSE Odisha TGT HINDI 2022]

- (A) सोना - चमक
(B) सोना - धतूरा
(C) धतूरा - नशा
(D) धन - सोना

ANS- (B) सोना - धतूरा

व्याख्या: बिहारी के दोहे में पहले 'कनक' का अर्थ **सोना** और दूसरे 'कनक' का अर्थ **धतूरा** है। इस प्रकार एक ही शब्द के दो अर्थ आने से यमक अलंकार बनता है। दोहे का भाव है कि सोने में धतूरे से सौ गुना अधिक नशा है।

मुख्य बिंदु:

- ♦ कवि: बिहारी रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि हैं।
- ♦ ग्रंथ: उनकी एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' है।
- ♦ भाषा: उनकी रचना ब्रजभाषा में है और दोहा छंद में लिखी गई है।

अन्य विकल्प:

- (A) **सोना - चमक** — चमक के लिए 'कांति', 'आभा' और 'दीप्ति' जैसे शब्द आते हैं।
(C) **धतूरा - नशा** — 'नशा' के लिए दोहे में 'मादकता' शब्द आया है।
(D) **धन - सोना** — 'धन' के पर्याय 'वित्त' और 'संपत्ति' हैं; 'कनक' का पहला अर्थ सोना है।

Q-5 निम्नलिखित में से कौन-सा नारी पात्र जयशंकर प्रसाद के 'चंद्रगुप्त' नाटक से संबंध नहीं रखता?

[DSE Odisha TGT HINDI 2022]

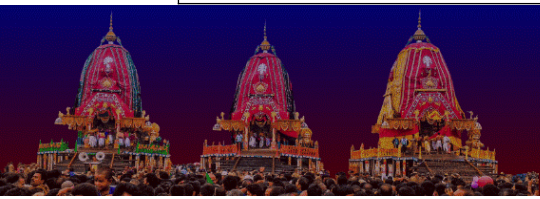
- (A) मालविका
(B) अलका
(C) कल्याणी
(D) ध्रुवस्वामिनी

ANS- (D) ध्रुवस्वामिनी

व्याख्या: जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चंद्रगुप्त' में मालविका, अलका और कल्याणी नारी पात्र हैं। **ध्रुवस्वामिनी** इस नाटक का पात्र नहीं है। वह प्रसाद के अलग नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' की नायिका है।

मुख्य बिंदु:

- ♦ नाटक: 'चंद्रगुप्त' ऐतिहासिक नाटक है, जो मौर्य काल पर आधारित है।
- ♦ अन्य पात्र: इसमें चाणक्य और कार्नेलिया जैसे पात्र भी हैं।



♦ रचनाकार: जयशंकर प्रसाद छायावाद के चार स्तंभों में से एक हैं।

अन्य विकल्प:

(A) मालविका — सिंधु देश की राजकुमारी, जो इसी नाटक में चंद्रगुप्त के लिए अपने प्राण दे देती है।

(B) अलका — तक्षशिला की राजकुमारी के रूप में यह इसी नाटक में है।

(C) कल्याणी — मगध के राजा नंद की पुत्री, जो इसी नाटक की नारी पात्र है।

► Liked these solutions? This demo has only 10 of the 290 Hindi subject questions from 3 TGT Hindi papers. Get all 47 High School Teacher PYQ papers (RHT, LTR & SSB) + 1,157 PYQ Tests in the COMBO (63000 PYQ) package of the [Tech Of World App](#) – only ₹324 with coupon code **TODAY**.

Q-6 'शिशु दूध पीकर सो गया।' इस सरल वाक्य को संयुक्त वाक्य में परिवर्तन करने पर होगा -

[DSE Odisha TGT HINDI 2022]

(A) शिशु ने दूध पिया और सो गया।

(B) जो शिशु दूध पीया वह सो गया।

(C) शिशु दूध पी रहा है और सो रहा है।

(D) शिशु दूध पीने से पहले सो गया।

ANS- (A) शिशु ने दूध पिया और सो गया।

व्याख्या: सरल वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया होती है और दूसरी क्रिया 'कर' के साथ जुड़ी होती है। संयुक्त वाक्य में दोनों क्रियाएँ अलग उपवाक्य बनती हैं और 'और' से जुड़ती हैं। 'दूध पीकर सो गया' = 'दूध पिया और सो गया'।

नियम: 'पूर्वकालिक क्रिया (-कर)' को स्वतंत्र उपवाक्य बनाकर 'और' जैसे समुच्चयबोधक से जोड़ने पर संयुक्त वाक्य बनता है।

अन्य विकल्प:

(B) जो शिशु दूध पीया वह सो गया: इसमें 'जो...वह' आश्रित उपवाक्य बनाता है, इसलिए यह मिश्र वाक्य है।

(C) शिशु दूध पी रहा है और सो रहा है: यह संयुक्त तो है, पर काल बदलकर वर्तमान हो गया है।

(D) शिशु दूध पीने से पहले सो गया: इसमें क्रमबद्धता का अर्थ उलट गया है और यह सरल वाक्य ही है।

Q-7 किसने कहा कि "पुष्टिमार्ग का जहाज जात है सो जाको कछु लेना हो सो लेउ"

[OSSC RHT Hindi Main 2023 By TCS]

(A) श्री वल्लभाचार्य

(B) चैतन्य महाप्रभु

(C) श्री विठ्ठलनाथ



(D) ଶ୍ରୀତ୍ତ୍ୱାମୀ

ANS- (C) ଶ୍ରୀ ବିଢ଼ଲନାଥ

ବ୍ୟାख्या: ଯହ କଥନ **ଶ୍ରୀ ବିଢ଼ଲନାଥ** କା ମାନା ଯାତା ହେ। ବେ ବଲ୍ଲଭାଚାର୍ଯ୍ୟ କେ ପୁତ୍ର ଥେ ଓର ଲୋଗ ଉନ୍ହେ ଗୋସାଈଁ ଜୀ କହତେ ଥେ। ଯହ ବାକ୍ୟ ସୁରଦାସ କେ ଲିଏ କହା ଗୟା ବତାୟା ଯାତା ହେ। ଉନ୍ହାକି ଦୃଷ୍ଟି ମେଁ ସୁରଦାସ ଭକ୍ତି କେ ଜହାଜ ଥେ।

ମୁଖ୍ୟ ବିନ୍ଦୁ:

- ◆ ଅଷ୍ଟଛାପ: ବିଢ଼ଲନାଥ ନେ ବଲ୍ଲଭ ସମ୍ପ୍ରଦାୟ କେ ଆଠ କବିୟୋଁ କି ମଞ୍ଡଲୀ ଅଷ୍ଟଛାପ ବନାଈ।
- ◆ ଆଠ କବି: ସୁରଦାସ, କୁମ୍ଭନଦାସ, ପରମାନନ୍ଦଦାସ, କୃଷ୍ଣଦାସ, ଗୋବିନ୍ଦସ୍ୱାମୀ, ଶ୍ରୀତ୍ତ୍ୱାମୀ, ଚତୁର୍ଭୁଜଦାସ ଓର ନନ୍ଦଦାସ।
- ◆ ଗ୍ରନ୍ଥ: 'ଚୌରାଶି ବୈଷ୍ଣବନ କି ବାର୍ତା' ମେଁ ଏସେ ବଚନୋଁ କା ବର୍ଣ୍ଣନ ମିଳତା ହେ।

ଅନ୍ୟ ବିକଳ୍ପ:

- (A) **ଶ୍ରୀ ବଲ୍ଲଭାଚାର୍ଯ୍ୟ** — ଯେ ପୁଷ୍ଟିମାର୍ଗ କେ ପ୍ରବର୍ତ୍ତକ ଥେ ଓର ଶୁଦ୍ଧାଦ୍ୱୈତ ମତ ସେ ଜୁଡେ ହେଁ।
(B) **ଚୈତନ୍ୟ ମହାପ୍ରଭୁ** — ଯେ ବଙ୍ଗାଳ ମେଁ ଗୌଡ଼ୀୟ ବୈଷ୍ଣବ ସମ୍ପ୍ରଦାୟ କେ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ସନ୍ତ ଥେ।
(D) **ଶ୍ରୀତ୍ତ୍ୱାମୀ** — ଯେ ଅଷ୍ଟଛାପ କେ କବି ଓର ବିଢ଼ଲନାଥ କେ ଶିଷ୍ୟ ଥେ।

Q-8 'ଚତୁର୍ଭୁଜ' ମେଁ କୌନ ସା ସମାସ ହେ?

[OSSC RHT Hindi Main 2023 By TCS]

- (A) ତତ୍ପରୁଷ
(B) ଦ୍ୱନ୍ଦ୍ୱ
(C) କର୍ମଧାରୟ
(D) ବହୁବ୍ରୀହି

ANS- (D) ବହୁବ୍ରୀହି

ବ୍ୟାख्या: 'ଚତୁର୍ଭୁଜ' କା ବିଗ୍ରହ ହେ 'ଚାର ହେଁ ଭୁଜାଈଁ ଜିସକି, ବହ' ଅର୍ଥାତ୍ **ବିଷ୍ଣୁ**। ଯହାଁ ସମସ୍ତ ପଦ ଅପନେ ଶବ୍ଦୋଁ କେ ଅର୍ଥ ସେ ଅଲଗ କିସି ତୈସରେ ଅର୍ଥ କୋ ବତାତା ହେ। ଇସଲିଏ ଇସମେଁ **ବହୁବ୍ରୀହି** ସମାସ ହେ। 'ଚାର ଭୁଜାଈଁ କା ସମୂହ' ଅର୍ଥ ଲେନେ ପର ଇସେ ଦ୍ୱିଗୁ ଭି କହତେ ହେଁ, ପର ବହ ବିକଳ୍ପ ଯହାଁ ନହିଁ ହେ।

ନିୟମ: ଜବ ସମସ୍ତ ପଦ କିସି ଅନ୍ୟ (ତୈସରେ) ପଦାର୍ଥ କା ବୋଧ କରାଏ, ତବ **ବହୁବ୍ରୀହି** ସମାସ ହୋତା ହେ — ପୀତାମ୍ବର, ଦଶାନନ, ଚତୁର୍ଭୁଜ।

ଅନ୍ୟ ବିକଳ୍ପ:

- (A) **ତତ୍ପରୁଷ:** ଇସମେଁ ଉତ୍ତର ପଦ ପ୍ରଧାନ ହୋତା ହେ, ଜୈସେ 'ରାଜପୁତ୍ର' — ରାଜା କା ପୁତ୍ର।
(B) **ଦ୍ୱନ୍ଦ୍ୱ:** ଇସମେଁ ଦୋନୋଁ ପଦ ପ୍ରଧାନ ହୋତେ ହେଁ, ଜୈସେ 'ମାତା-ପିତା'।
(C) **କର୍ମଧାରୟ:** ଇସମେଁ ବିଶେଷ୍ୟ-ବିଶେଷଣ ଯା ଉପମାନ-ଉପମେୟ କା ମେଲ ହୋତା ହେ, ଜୈସେ 'ନୀଳକମଳ'।

Q-9 ପଂତ କି କିସ କାବ୍ୟ କୃତି କୋ 'ଶାୟାବାଦ କା ମେନିଫେଷ୍ଟୋ' କହା ଗୟା?

[OSSC RHT Hindi Main 2023 By TCS]

- (A) ପଲ୍ଲବ



- (B) वीणा
(C) ग्रंथि
(D) गुंजन

ANS- (A) पल्लव

व्याख्या: सुमित्रानन्दन पंत की काव्य कृति **पल्लव** (1926) को 'छायावाद का मनीफेस्टो' कहा जाता है। इसकी भूमिका में पंत ने छायावादी काव्य की भाषा और भाव का परिचय दिया है। इसी भूमिका के कारण यह कृति घोषणा-पत्र मानी गई।

मुख्य बिंदु:

- ♦ **स्थान:** पंत छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में गिने जाते हैं।
- ♦ **उपनाम:** उन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है।
- ♦ **सम्मान:** 'चिदम्बरा' पर उन्हें जानपीठ पुरस्कार (1968) मिला।

अन्य विकल्प:

- (B) वीणा — पंत का आरंभिक काव्य-संग्रह (1927) है।
(C) ग्रंथि — पंत की प्रारंभिक काव्य रचना (1920) है।
(D) गुंजन — पंत का काव्य-संग्रह (1932) है, जिसमें प्रकृति और चिंतन के गीत हैं।

Q-10 'जय' मूल शब्द में कौन सा उपसर्ग जोड़ने से उल्टा अर्थ देगा?

[OSSC RHT Hindi Main 2023 By TCS]

- (A) वि
(B) परा
(C) अ
(D) पर

ANS- (B) परा

व्याख्या: 'जय' का अर्थ जीत है। इसमें 'परा' उपसर्ग जोड़ने पर **पराजय** बनता है, जिसका अर्थ हार है। यह 'जय' का उल्टा अर्थ देता है। परा + जय = पराजय।

नियम: 'परा' उपसर्ग का अर्थ उल्टा या हीन होना है — पराजय, पराभव, पराक्रम (अपवाद)।

अन्य विकल्प:

- (A) वि: 'वि' + 'जय' = विजय; यहाँ 'वि' विशेष का अर्थ देता है, इसलिए अर्थ जीत ही रहता है।
(C) अ: 'अ' + 'जय' = अजय; इसका अर्थ है जिसे जीता न जा सके, यह भी जीत से जुड़ा भाव है।
(D) पर: 'पर' संस्कृत के बाईस उपसर्गों में नहीं गिना जाता; 'परजय' जैसा शब्द प्रचलित नहीं है।





ଓଡ଼ିଶାର ସମସ୍ତ ପୂର୍ବ ବର୍ଷର ପ୍ରଶ୍ନ ଉତ୍ତର ପାଇଁ
Download “**Tech Of World**” App



Call/WhatsApp-
8596976190

★ UNLOCK ALL HIGH SCHOOL TEACHER PYQ ★

You just solved 10 questions. 6,300+ more solved PYQ are waiting for you.

COMBO - ଓଡ଼ିଶା
ପୂର୍ବ ବର୍ଷ ପ୍ରଶ୍ନ

63,453 - PYQ

1,157 - TEST

ପୂର୍ବ 10 ବର୍ଷର
OSSSC, OSSC, OPSC,
ପୋଲିସ୍, CT, B.ED, RHT

GK ODIA ENGLISH MATH COMPUTER REASONING PEDAGOGY

COMPLETE PREPARATION, COMPLETE SUCCESS!

COMBO (63000 PYQ)

Everything you need to crack OSSC RHT, LTR & SSB TGT

✓ 47 High School Teacher papers – RHT 2019 – 2023, LTR 2024-25 & SSB 2024

✓ 6,300+ questions solved step by step, with explanations

✓ Every stream – PCM, CBZ, Arts, Hindi, Sanskrit, PET & Odia

✓ BONUS: 63,453 PYQ + 1,157 Tests of OSSSC, OSSC, OPSC, Police, CT, B.Ed & RHT

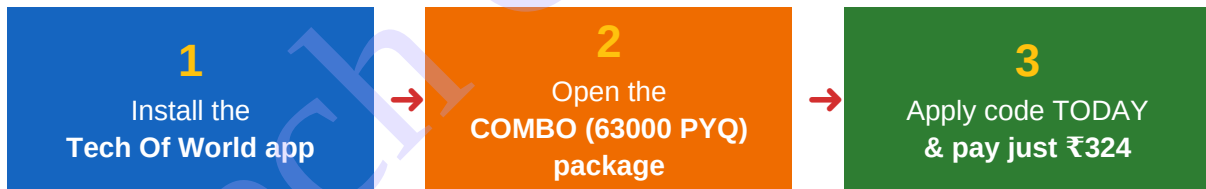
SPECIAL OFFER PRICE

Regular price ₹349

₹324 ONLY

Use code **TODAY** & save 7% today

GET IT IN 3 EASY STEPS



Scan the QR code or tap the button to download

▶ **DOWNLOAD TECH OF WORLD APP**

Need help? WhatsApp: 8596976190 | techhofworld.in

★ 4.6

Rating on Google Play

1,00,000+

Downloads on Google Play

24-hour

Refund system

Practise the real High School Teacher questions — start today with code **TODAY**

